सं श्रो वि । एफ बी । 88-86/25925 — चूंकि हरियाणां के राज्यपाल की राय है कि मैं वाबरी वाला स्टील एण्ड इन्जीनियरिंग प्रा. लि., प्लाट नं वाबरे 136, सैक्टर 24, फरीदाबाद, के श्रीमक श्री रघकीर सिंह, पुत्र श्री हरिला मार्फत श्री भीम सिंह यादव, मकान नं 192/15, फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई कुन्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा संरकारी अधिसूचना से 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदांबाद, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीवे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्टं करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है :--

क्या श्री रघबीर सिंह की सेवा समाप्त की गई है या वह स्वयं गैर हाजिर हो रहा है? इस बिन्दु पर निर्गय के फलस्वरूप वह किस राहत का हकदार है ?

सं ग्रो वि /एफ डी / 20-86 / 25932 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं मुख्य प्रशासक, फरीदाबाद कम्पलेक्स प्रशासन, फरीदाबाद के श्रीमक श्री रमेश, पुत्र श्री जीवा राम, मार्फत श्री ग्रार पी हिंस, 687, न्यू थर्मल कालोनी, सैक्टर 22, फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विचाद की न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट फेरना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रीद्योगिक विवाद श्रिष्ठिनयम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रेष्ठिसूचना सं 5415-3-श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए श्रिष्ठिस्चना सं 11495-जी-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिष्ठसूचना की धारा 7 के अशोन गठित श्रम नायालग, करो सवाद, को विश्वदग्रेत या उसने सुर्गगर्ज या सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्गय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निद्धित करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विश्वादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री रमेश, पुत्र श्री जीवः राम की सेवाधों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ग्रो॰वि॰/एफ.डी./34-86/25939.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं॰ एण्डिले इन्जीनियरिंग कम्पनी, प्लाट नं॰ 306, सैक्टर 24, फरीदाबाद के श्रमिक श्री राजेन्द्र सिंह, पुत्र श्री गिरधर लाल मार्फत हिन्द मसदूर सभा, 29, शहीद चौक, फरीदाबाद, तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, ग्रोशोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई मिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-अम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुऐ अधिसूचना सं० 11495-जी-अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अशीन गठित अम न्यायालय, फरोदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामना न्यायिनिर्गय एवं पंचाट तीन माम में देने हेनु निर्दिश्य करते हैं जोकि उस्त प्रवन्त्रकों तथा अभिक्त के बीच या तो विवाद- प्रस्त मामना है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री राजेन्द्र सिंह की सेवाग्रों का सनापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह कित राजें का हकदार है ?